देश-विदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश

आप विधायकों को खरीदने की हुई कोशिश... 12

विषधर कालिया नाग का कान्हा ने किया मान मर्दन... 10

जन एक्सप्रेस

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ
वर्ष: 14 | अंक: 19
मूल्य: ₹3.00/-
पेज : 12
रविवार | 30 अक्टूबर, 2022

वर्तमान परिस्थिति के अनुसार खेती की सलाह दी

जन एक्सप्रेस, कानपुर नगर। सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर में चल रहे फसल अवशेष प्रबंधन योजना के अंतर्गत पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का समापन शनिवार को हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के सह निदेशक प्रसार डॉ.पी.के.राठी ने किसानों को वर्तमान परिस्थिति के अनुसार खेती करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि गांव में मधुमक्खी पालन, गो पालन, बीज उत्पादन, केला की खेती, ड्रैगन फ्रूट आदि नवीनतम तकनीकों का प्रयोग कर आमदनी को बढ़ाया जा सकता है। डॉ. अरुण कुमार सिंह ने कहा कि फसलों के अवशेषों को जलाने से मानव एवं मृदा स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है। मृदा वैज्ञानिक डॉ.खलील खान ने कहा कि किसान फसल के अवशेष का प्रयोग अपने आर्थिक समृद्धि के लिए कर सकते हैं। वैज्ञानिक डॉक्टर मिथिलेश वर्मा ने कहा कि धान के अवशेषों का मल्चिंग के रूप में प्रयोग कर सिंचाई की आवश्यकता को कम कर सकते हैं। डॉ.एस.एल. वर्मा ने फसल अवशेषों को पशुओं के लिए चारे के रूप में प्रयोग एवं संरक्षित करने की सलाह दी। प्रशिक्षण के समापन दिवस पर मुख्य अतिथि द्वारा किसानों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विभिन्न गांवों के 25 किसानों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा अंत में पराली न स्वयं जलाने व न दूसरों को जलाने देने की शपथ ली।

अधिकतम तापमान 27.00° >> न्यूनतम तापमान 17.00° >> सूर्योदय 6:30 >> सूर्यास्त 17:33 >> डॉलर 82.29 >> यूरो 8

दैनिक भास्कर

देश का विश्वसनीय अखबार

लखनऊ | वर्ष-07, अंक-27 | रविवार, 30 अक्टूबर 2022 | कुल पृष्ठ 12 | मूल्य 3.00 रुपये

झांसी, नोएडा, लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित

पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण समापन पर वितरित किए गए प्रमाण पत्र

वर्तमान परिस्थिति के अनुसार करें खेती : डॉ. राठी

भास्कर ब्यूरो

कानपुर। सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर में चल रहे फसल अवशेष प्रबंधन योजना अंतर्गत पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का आज विधिवत समापन हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के सह निदेशक प्रसार डॉ. पीके राठी ने किसानों को वर्तमान परिस्थिति के अनुसार खेती करने की सलाह दी,उन्होंने कहा कि अपनी आमदनी को सुरक्षित बनाए रखने के लिए कृषि विविधीकरण अपनाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि गांव में मधुमक्खी पालन, गोपालन, बीज उत्पादन, केला की खेती, ड्रैगन फ्रूट आदि नवीनतम तकनीकों का

प्रयोग करें। जिससे आमदनी में इजाफा हो इस अवसर पर डॉ अरुण कुमार सिंह ने कहा कि वर्तमान समय में जैव संवर्धित फसलों की प्रजातियों की खेती अधिक लाभप्रद होगी। उन्होंने यह भी बताया कि फसलों के अवशेषों को जलाने से मानव एवं मृदा स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है। मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने कहा कि फसल के अवशेष का प्रयोग अपने आर्थिक समृद्धि के लिए कर सकते है।वैज्ञानिक डॉक्टर मिथिलेश वर्मा ने कहा कि धान के अवशेषों का मल्चिंग के रूप में प्रयोग कर सिंचाई की आवश्यकता को कम कर सकते हैं। डॉ एस एल वर्मा ने फसल अवशेषों को पशुओ हेतु चारे के रूप में प्रयोग एवं संरक्षित करने की सलाह दी। वैज्ञानिक डॉ अजय कुमार सिंह ने फसलों में कीट बीमारी आदि के प्रबंधन पर जानकारी दी। डॉ शशिकांत ने कृषक उत्पादन संगठन के माध्यम से क्लस्टर खेती को बढ़ावा दिए जाने एवं इसके महत्व तथा लाभ के बारे में विस्तार से बताया।डॉक्टर निमिषा अवस्थी शुक्ला ने धान की पराली को मिट्टी में समाहित करने की तकनीकी के बारे में विस्तार से जानकारी दी। डॉ विनोद प्रकाश ने भविष्य में होने वाले जलवायु परिवर्तन के साथ अपनी खेती में परिवर्तन करने की किसानों को सलाह दी। कार्यक्रम का सुचारू रूप से संचालन डॉ खलील खान ने किया।सभी अतिथियों का स्वागत एवं धन्यवाद केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ रामप्रकाश ने किया। प्रशिक्षण के अंतिम दिवस पर मुख्य अतिथि द्वारा किसानों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विभिन्न गांवों के 25 किसानों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा अंत में पराली न स्वयं जलाने व न दूसरों को जलाने देने की शपथ ली गई।

WORLD खबर EXPRESS

WORLD खबर एक्सप्रेस

शनिवार 29 अक्टूबर 2022 | अंक - 285

www.worldkhabarexpress.media
www.worldkhabarexpress.com

www.twitter.com/worldkhabarexpress www.facebook.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress MID DAY

पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का हुआ समापन

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर में चल रहे फसल अवशेष प्रबंधन योजना अंतर्गत पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का आज विधिवत समापन हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के सह निदेशक प्रसार डॉ पीके राठी ने किसानों को वर्तमान परिस्थिति के अनुसार खेती करने की सलाह दी,उन्होंने कहा कि अपनी आमदनी को सुरक्षित बनाए रखने के लिए कृषि विविधीकरण अपनाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि गांव में मधुमक्खी पालन, मौनपालन, बीज उत्पादन, केला की खेती, ड्रैगन फ्रूट आदि नवीनतम तकनीकों का प्रयोग करें। जिससे आमदनी में इजाफा हो। इस अवसर पर डॉ अरुण कुमार सिंह ने कहा कि वर्तमान समय में जैव संवर्धित फसलों की प्रजातियों की खेती अधिक लाभदायक होगी। उन्होंने यह भी बताया कि फसलों के अवशेषों को जलाने से मानव एवं मृदा स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़

वितरित किए गए प्रमाण पत्र

रहा है। मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने कहा कि फसल के अवशेष का प्रयोग अपने आर्थिक समृद्धि के लिए कर सकते हैं। वैज्ञानिक डॉक्टर मिथिलेश वर्मा ने कहा कि धान के अवशेषों का मल्चिंग के रूप में प्रयोग कर सिंचाई की आवश्यकता को कम कर सकते हैं। डॉ एस एन वर्मा ने फसल अवशेषों को पशुओं हेतु चारे के रूप में प्रयोग एवं संरक्षित करने की सलाह दी। वैज्ञानिक डॉ अजय कुमार सिंह ने फसलों में कीट बीमारी आदि के प्रबंधन पर जानकारी दी। डॉ शशिकांत ने कृषक उत्पादन संगठन के माध्यम से क्लस्टर खेती को बढ़ावा दिए जाने एवं इसके महत्व तथा लाभ के बारे में विस्तार से बताया। डॉक्टर निमिष अवस्थी शुक्ला ने धान की पराली को मिट्टी में समाहित करने की

तकनीकी के बारे में विस्तार से जानकारी दी। डॉ विनोद प्रकाश ने भविष्य में होने वाले जलवायु परिवर्तन के साथ अपनी खेती में परिवर्तन करने की किसानों को सलाह दी। कार्यक्रम का सुचारु रूप से संचालन डॉ खलील खान ने किया सभी अतिथियों का स्वागत एवं धन्यवाद केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ राजप्रकाश ने किया। प्रशिक्षण के अंतिम दिवस पर मुख्य अतिथि द्वारा किसानों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विभिन्न गांवों के 25 किसानों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा अंत में पराली न स्वयं जलाने व न दूसरों को जलाने देने की शपथ ली गई। और एक स्वर में कहा कि फसल अवशेषों को मिट्टी में मिला कर मृदा की उर्वरा शक्ति बढ़ाएंगे।

शाश्वत टाइम्स
हिन्दी दैनिक
30/10/2022

फसल अवशेष प्रबंधन पर पांच दिवसीय कृषक

प्रशिक्षण का हुआ समापन,वितरित किए गए प्रमाण पत्र

शाश्वत टाइम्स कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर में चल रहे फसल अवशेष प्रबंधन योजना अंतर्गत पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का शनिवार को विधिवत समापन हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के सह निदेशक प्रसार डॉ पीके राठी ने किसानों को वर्तमान परिस्थिति के अनुसार खेती करने की सलाह दी,उन्होंने कहा कि अपनी आमदनी को सुरक्षित बनाए रखने के लिए कृषि विविधीकरण अपनाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि गांव में मधुमक्खी पालन, गोपालन, बीज उत्पादन, केला की खेती, ड्रैगन फ्रूट आदि नवीनतम तकनीकों का प्रयोग करें। जिससे आमदनी में इजाफा हो।इस अवसर पर डॉ अरुण कुमार सिंह ने कहा कि वर्तमान समय में जैव संवर्धित फसलों की प्रजातियों की खेती अधिक लाभप्रद होगी। उन्होंने यह भी बताया कि फसलों के अवशेषों को जलाने से मानव एवं मृदा स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है। मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने कहा कि फसल के अवशोष का प्रयोग अपने आर्थिक समृद्धि के लिए कर सकते हैं।वैज्ञानिक डॉक्टर मिथिलेश वर्मा ने कहा कि धान के अवशेषों का मल्चिंग के रूप में प्रयोग कर सिंचाई की आवश्यकता को कम कर सकते हैं। डॉ एस एल वर्मा ने फसल अवशेषों को पशुओ हेतु चारे के रूप में प्रयोग एवं संरक्षित करने की सलाह दी। वैज्ञानिक डॉ अजय कुमार सिंह ने फसलों में कीट बीमारी आदि के प्रबंधन पर जानकारी दी। डॉ शशिकांत ने कृषक उत्पादन संगठन के माध्यम से क्लस्टर खेती को बढ़ावा दिए जाने एवं इसके महत्व तथा लाभ के बारे में विस्तार से बताया।डॉक्टर निमिषा अवस्थी शुक्ला ने धान की पराली को मिट्टी में समाहित करने की तकनीकी के बारे में विस्तार से जानकारी दी। डॉ विनोद प्रकाश ने भविष्य में होने वाले जलवायु परिवर्तन के साथ अपनी खेती में परिवर्तन करने की किसानों को सलाह दी। कार्यक्रम का सुचारू रूप से संचालन डॉ खलील खान ने किया।सभी अतिथियों का स्वागत एवं धन्यवाद केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ रामप्रकाश ने किया। प्रशिक्षण के अंतिम दिवस पर मुख्य अतिथि द्वारा किसानों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विभिन्न गांवों के 25 किसानों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा अंत में पराली न स्वयं जलाने व न दूसरों को जलाने देने की शपथ ली गई। और एक स्वर में कहा कि फसल अवशेषों को मिट्टी में मिला कर मृदा की उर्वरा शक्ति बढ़ाएंगे।

कृषि विविधीकरण अपनायें किसान

❑ फसल अवशेष प्रबंधन पर कृषक प्रशिक्षण का समापन, बांटे गये प्रमाणपत्र

कानपुर, 29 अक्टूबर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर में चल रहे फसल अवशेष प्रबंधन योजना अंतर्गत पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का आज विधिवत समापन हुआ। मुख्य अतिथि विवि के सह निदेशक प्रसार डॉ पीके राठी ने किसानों को वर्तमान परिस्थिति के अनुसार खेती करने की सलाह दी। उन्होंने कहाकि अपनी आमदनी को सुरक्षित बनाए रखने के लिए कृषि विविधीकरण अपनाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि गांव में मधुमक्खी पालन, गोपालन, बीज उत्पादन, केला की खेती, ड्रैगन फरूट आदि नवीनतम तकनीकों का प्रयोग करें। जिससे आमदनी में इजाफा हो। डॉ अरुण कुमार सिंह ने कहा कि वर्तमान समय में जैव संवर्धित फसलों की प्रजातियों की खेती अधिक लाभप्रद होगी। उन्होंने यह भी बताया कि फसलों के अवशेषों को जलाने से मानव एवं मृदा स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है। मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने कहा कि फसल के अवशोष का प्रयोग अपने आर्थिक समृद्धि के लिए कर सकते हैं। वैज्ञानिक डा. मिथिलेश वर्मा ने कहा कि धान के अवशेषों का मल्चिंग के रूप में प्रयोग कर सिंचाई की आवश्यकता को कम कर सकते हैं। डॉ एस एल वर्मा ने फसल अवशेषों को पशुओ हेतु चारे के रूप में प्रयोग एवं संरक्षित करने की सलाह दी। वैज्ञानिक डॉ अजय कुमार सिंह ने फसलों में कीट बीमारी आदि के प्रबंधन पर जानकारी दी। डॉ शशिकांत ने कृषक उत्पादन संगठन के माध्यम से क्लस्टर खेती को बढ़ावा दिए जाने एवं इसके महत्व तथा लाभ के बारे में विस्तार से बताया। डॉ निमिषा अवस्थी शुक्ला ने धान की पराली को मिट्टी में समाहित करने की तकनीकी के बारे में विस्तार से जानकारी दी। डॉ विनोद प्रकाश ने भविष्य में होने वाले जलवायु परिवर्तन के साथ अपनी खेती में परिवर्तन करने की किसानों को सलाह दी। कार्यक्रम का सुचारू रूप से संचालन डॉ खलील खान ने किया।सभी अतिथियों का स्वागत एवं धन्यवाद केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ रामप्रकाश ने किया। प्रशिक्षण के अंतिम दिवस पर मुख्य अतिथि द्वारा किसानों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विभिन्न गांवों के 25 किसानों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा अंत में पराली न स्वयं जलाने व न दूसरों को जलाने देने की शपथ ली गई और एक स्वर में कहा कि फसल अवशेषों को मिट्टी में मिला कर मृदा की उर्वरा शक्ति बढ़ाएंगे।

किसान को सम्मानित करते मुख्य अतिथि।

फसल अवशेष प्रबंधन पर कृषक प्रशिक्षण का हुआ समापन

दीपक गौड़ (जनमत टुडे)

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर में चल रहे फसल अवशेष प्रबंधन योजना अंतर्गत पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का आज विधिवत समापन हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के सह निदेशक प्रसार डॉ पीके राठी ने किसानों को वर्तमान परिस्थिति के अनुसार खेती करने की सलाह दी,उन्होंने कहा कि अपनी आमदनी को सुरक्षित बनाए रखने के लिए कृषि विविधीकरण अपनाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि गांव में मधुमक्खी पालन, गोपालन, बीज उत्पादन, केला की खेती, ड्रैगन फ्रूट आदि नवीनतम तकनीकों का प्रयोग करें। जिससे आमदनी में इजाफा हो।इस अवसर पर डॉ अरुण कुमार सिंह ने कहा कि वर्तमान समय में जैव संवर्धित फसलों की प्रजातियों की खेती अधिक लाभप्रद होगी। उन्होंने यह भी बताया कि फसलों के अवशेषों को जलाने से मानव एवं मृदा स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है। मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने कहा कि फसल के अवशोष का प्रयोग अपने आर्थिक समृद्धि के लिए कर सकते हैं। वैज्ञानिक डॉक्टर मिथिलेश वर्मा ने कहा कि धान के अवशेषों का मल्चिंग के रूप में प्रयोग कर सिंचाई की आवश्यकता को कम कर सकते हैं। डॉ एस एल वर्मा ने फसल अवशेषों को पशुओ हेतु चारे के रूप में प्रयोग एवं संरक्षित करने की सलाह दी। वैज्ञानिक डॉ अजय कुमार सिंह ने फसलों में कीट बीमारी आदि के प्रबंधन पर जानकारी दी। डॉ शशिकांत ने कृषक उत्पादन संगठन के माध्यम से क्लस्टर खेती को बढ़ावा दिए जाने एवं इसके महत्व तथा लाभ के बारे में विस्तार से बताया।डॉक्टर निमिषा अवस्थी शुक्ला ने धान की पराली को मिट्टी में समाहित करने की तकनीकी के बारे में विस्तार से जानकारी दी। डॉ विनोद प्रकाश ने भविष्य में होने वाले जलवायु परिवर्तन के साथ अपनी खेती में परिवर्तन करने की किसानों को सलाह दी। कार्यक्रम का सुचारू रूप से संचालन डॉ खलील खान ने किया।सभी अतिथियों का स्वागत एवं धन्यवाद केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ रामप्रकाश ने किया। प्रशिक्षण के अंतिम दिवस पर मुख्य अतिथि द्वारा किसानों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विभिन्न गांवों के 25 किसानों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा अंत में पराली न स्वयं जलाने व न दूसरों को जलाने देने की शपथ ली गई। और एक स्वर में कहा कि फसल अवशेषों को मिट्टी में मिला कर मृदा की उर्वरा शक्ति बढ़ाएंगे।

कृषक प्रशिक्षण समापन पर वितरित किए प्रमाण पत्र

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर में चल रहे फसल अवशेष प्रबंधन योजना अंतर्गत पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का आज विधिवत समापन हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के सह निदेशक प्रसार डॉ पौके राठी ने किसानों को वर्तमान परिस्थिति के अनुसार खेती करने की सलाह दी,उन्होंने कहा कि अपनी आमदनी को सुरक्षित बनाए रखने के लिए कृषि विविधीकरण अपनाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि गांव में मधुमक्खी पालन, गोपालन, बीज उत्पादन, केला की खेती, ड्रैगन फ्रूट आदि नवीनतम तकनीकों का प्रयोग करें। जिससे आमदनी में इजाफा हो।इस अवसर पर डॉ अरुण कुमार सिंह ने कहा कि वर्तमान समय में जैव संवर्धित फसलों की प्रजातियों की खेती अधिक लाभप्रद होगी। उन्होंने यह भी बताया कि फसलों के अवशेषों को जलाने से मानव एवं मृदा स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है। मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने कहा कि फसल के अवशोष का प्रयोग अपने आर्थिक समृद्धि के लिए कर सकते हैं।वैज्ञानिक डॉक्टर मिथिलेश वर्मा ने कहा कि धान के अवशेषों का मल्चिंग के रूप में प्रयोग कर सिंचाई की आवश्यकता को कम कर सकते हैं। डॉ एस एल वर्मा ने फसल अवशेषों को पशुओ हेतु चारे के रूप में

प्रयोग एवं संरक्षित करने की सलाह दी। वैज्ञानिक डॉ अजय कुमार सिंह ने फसलों में कीट बीमारी आदि के प्रबंधन पर जानकारी दी। डॉ शशिकांत ने कृषक उत्पादन संगठन के माध्यम से क्लस्टर खेती को बढ़ावा दिए जाने एवं इसके महत्व तथा लाभ के बारे में विस्तार से बताया।डॉक्टर निमिषा अवस्थी शुक्ला ने धान की पराली को मिट्टी में समाहित करने की तकनीकी के बारे में विस्तार से जानकारी दी। डॉ विनोद प्रकाश ने भविष्य में होने वाले जलवायु परिवर्तन के साथ अपनी खेती में परिवर्तन करने की किसानों को सलाह दी। कार्यक्रम का सुचारू रूप से संचालन डॉ खलील खान ने किया।सभी अतिथियों का स्वागत एवं धन्यवाद केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ रामप्रकाश ने किया। प्रशिक्षण के अंतिम दिवस पर मुख्य अतिथि द्वारा किसानों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विभिन्न गांवों के 25 किसानों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा अंत में पराली न स्वयं जलाने व न दूसरों को जलाने देने की शपथ ली गई। और एक स्वर में कहा कि फसल अवशेषों को मिट्टी में मिला कर मृदा की उर्वरा शक्ति बढ़ाएंगे।